06/08/2020

PHILOSOPHY (Sub)

Ajeet kumar
Assistant Professor,
C.M.S College.
Domwarthat.

Ethics

Nature of moral judgment

किसी व्यक्ति के कर्म को हम नैतिक दृष्टि से उचित अनुचित शुभ-अशुभ आदि बतलाते हैं। इसे ही मानव आचरण का मूल्यांकन कहते हैं। इस मूल्यांकन के द्वारा हम व्यक्ति को उचित आचरण का बोध कराते हैं। यदि उचित आचरण का बोध न कराना हो तो हम किसी के आचरण को उचित ही क्यों कहेंगे? उचित आचरण इसलिए कहते हैं कि उस व्यक्ति को उचित का बोध हो जाय इस प्रकार नैतिक कर्मों का मूल्यांकन करते हैं। और यह मूल्यांकन इसलिए किया जाता है कि व्यक्ति को उचित अनुचित का बोध हो जायें। व्यक्ति कर्म तो सर्वदा करता है, अपने दिन में आचरण करता रहता है, परन्तु

हम पहले ~~विस्तृत~~ विचार कर आये हैं
कि नैतिक निर्णय का विषय ऐच्छिक
कर्म है। ऐच्छिक कर्म वही हैं जिन्हें
हम स्वतः अपनी इच्छाशक्ति से या
अपने संकल्प से करते हैं। ~~ऐच्छिक~~
~~कर्म वही है जिसे हम स्वतः अपनी~~
हम स्वतः अपनी इच्छा से वही
कार्य करते हैं जिसे हम अपने
लिए उचित समझते हैं अपने हित में
मानते हैं। इसमें उचित अनुचित रूप
में मूल्यांकन की क्या आवश्यकता?
सामाजिक दृष्टि से उचित न हो जिसे
हम अपने हित में समझते हो। वह
समाज के अहित में हो। इस प्रकार
मात्र एक व्यक्ति और समाज के
लिए उचित है यही ज्ञान लोगों
तथा एक सर्वांगीण रूप में उचित कर्म
कर सकने औचित्य का ज्ञान उचित
आचरण के लिए आवश्यक है। यदि
मानव को उचित आचरण का बोध
न हो तो उसके लिए उचित आचरण
करना भी कठिन होगा।